संत ऑगस्टाईन

354 - 430 ई०

By
DR NISHA GUPTA
Associate Professor
Drg & Ptt Deptt
J.K.P.G College Muzaffarnagar

Scanned with CamScanner

Expt. No. _____ Page No. 1

संत ऑगस्टाईन

ऑगस्टाईन एक महान दार्शनिक थे। इनका जन्म 13 नवम्बर सन् 354 में रोमन अफ्रीका के नुमीडिया प्रांत के थागास्ते नामक शहर में हुआ था। आरम्भ में इन्होंने ईसाई धर्म की शिक्षा ग्रहण की

सेंट ऑगस्टाईन सेंट एम्ब्रोस के शिष्य थे। पाँचवी शताब्दी के ईसाई पादरी लेखकों में सबसे महान व्यक्ति थे। इन्होंने चिन्तन जगत को अपने महत्वपूर्ण विचार प्रदान किये।

प्रो० सेबाइन के अनुसार -

"सत आगस्टाईन का दर्शन केवल थोड़ा सा ही व्यवस्थित था पर उसने प्राचीन काल के समस्त ज्ञान विज्ञान को आत्मसात कर लिया था।

ये सेंट एम्ब्रोस के शिष्य थे। ये पाँचवी शताब्दी के ईसाई पादरी लेखको में सबसे महान व्यक्ति थे। इन्होंने अपनी महत्वपूर्ण विचार धारा जनता तक प्रवाहित की। बाल्यकाल से ही ये बड़े होनहार एवं कुशल व्यक्ति थे। 33 वर्ष की आयु में इन्होंने ईसाई धर्म की शिक्षा ग्रहण की। इसीलिए इन्होंने कला को वासना विलासिता पूर्ण, कामुक और भ्रमात्मक आदि कहकर निन्दा की

कला के विषय में इनका दर्शन द्वन्द्वात्मक है। कलाएँ असत्य होते हुए भी सत्य हैं। असत्य क्योंकि ये भ्रम पैदा करती हैं। लेकिन कला स्वयं के प्रयासों से सत्य की ओर बढ़ती है। इन्होंने अपनी रचनाओं के द्वारा ईसाई धर्म को संकट से उभारने के प्रयास किये। इन्होंने कला के क्षेत्र में क्रान्तिकारी विचार दिये। कला को नई व्याख्या दी।

Teacher's Signature : _____

Scanned with CamScanner

ऑगस्टीन के समकालीन जेरोम के अनुसार "ऑगस्टीन ने प्राचीन विश्वास को स्थापित किया। इन्होंने विभिन्न तरीकों और दृष्टिकोणों को समायोजित करते हुए धर्म और दर्शन के लिए अपना दृष्टिकोण विकसित किया। जब पश्चिम रोमन साम्राज्य विघटित होगया तो ऑगस्टीन ने चर्च को ईश्वर के आध्यात्मिक शहर के रूप में देखा।

जहाँ प्लेटो, अरस्तु की धारणाएँ गणित जीवविज्ञान राजनीति के आधार पर थी वहीं ऑगस्टीन की धारणा धर्म से जुड़ी थी। इनकी कला की व्याख्या में तीन धाराएँ मिली

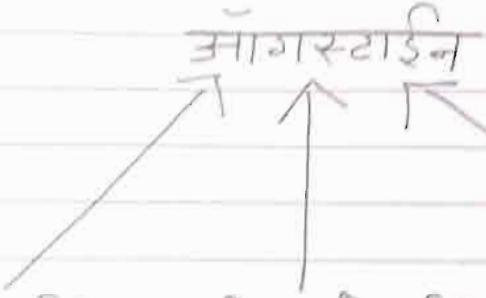

हर नगर की अपनी पहचान और धारा थी। सभी को नए धर्म एवं दर्शन के अनुसार नई व्याख्या होनी थी। ऑगस्टाईन प्राचीन को नई माला में नए रूपों ढाल रहे थे। आगस्टाईन के अनुसार — Beauty is unity.

सौन्दर्यानुभूति एक 'स' रहस्यमयी अनुभूति है। सौन्दर्य के प्रति इनका दृष्टिकोण पूर्णतः आध्यात्मिक था। इन्होंने भी महान दार्शनिक प्लेटो के समान सत्यम् शिवम् सुन्दरम् में एक अन्तः सम्बन्ध पाया। इन्होंने स्पष्ट कहा है —

जो व्यक्ति केवल आँखों से देखता है।

Teacher's Signature : _____

Scanned with CamScanner

आँखों से ऊपर उठकर कुछ भी नहीं देखता वह कभी भी सृजनात्मक रूपों के दर्शन नहीं कर सकता।

कहीं-२ इन्होंने सौन्दर्य को उपयोगिता से भी जोड़ा है। प्लेटो के समान इन्होंने दैवी प्रकृति को ही सौन्दर्य का स्त्रोत माना है। इन्होंने यूनिटि, ऑर्डर और हारमनी में सौन्दर्य के दर्शन किये।

ऑन विग्स और चैरिटी नामक ग्रन्थ में इन्होंने सौन्दर्य के आदर्शवादी स्वरूप का विवेचन किया है। इन्होंने कहा कि नश्वर सौन्दर्य दैवी सौन्दर्य तक पहुँचने का रास्ता है।

जो सौन्दर्य हम आँखों के द्वारा देखते हैं, कानों के द्वारा सुनकर महसूस करते हैं वही शुभ होता है। इसी सौन्दर्य के माध्यम से बौद्धिक एवं आध्यात्मिक सौन्दर्य की ओर बढ़ा जा सकता है। बाह्यसौन्दर्य की लालसा में आत्मिक सौन्दर्य को नजर अंदाज नहीं करना चाहिए। आत्मिक सौन्दर्य सर्वश्रेष्ठ होता है।

Scanned with CamScanner